नर्सिंग सेवा का ऐतिहासिक -समाजशास्त्रीय अध्ययन

तेजवीर सिंह[1], डॉ नवनीत कौर आहूजा[2]

[1]*शोधार्थी, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली (उ.प्र.)*

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)

[2]*आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज बरेली, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली (उ. प्र.)*

सारांश: **नर्सिंग सेवा न केवल एक चिकित्सकीय व्यवसाय है, बल्कि यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था भी है जो समाज के बदलते मूल्यों, लिंग-भेद, वर्ग संरचना और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को प्रतिबिंबित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र नर्सिंग सेवा के ऐतिहासिक विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है प्राचीन काल से लेकर आधुनिक भारत तक। इसमें फ्लोरेंस नाइटिंगेल के योगदान, भारत में नर्सिंग शिक्षा के विस्तार, GNM-ANM जैसी संरचनाओं और सामाजिक परिवर्तन में नर्सिंग की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।**

शब्द कुंजी: **उपचारिका, नर्सिंग सेवा, चिकित्सकीय व्यवसाय, इतिहास, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, नर्स, भारत में नर्सिंग।**

I. प्रस्तावना

मानव समाज में स्वास्थ्य सेवा का स्थान सदैव केंद्रीय रहा है। जब भी कोई व्यक्ति रोगग्रस्त होता है, उसे शारीरिक उपचार के साथ-साथ भावनात्मक संबल की भी आवश्यकता होती है, और यही सेवा भाव 'नर्सिंग' का मूल आधार है। भाषाई दृष्टि से देखें तो 'नर्सिंग' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'Nutricius' (न्यूट्रिशियस) से हुई है, जिसका अर्थ 'पोषण' या 'पालन-पोषण' करना है। स्पष्ट है कि नर्सिंग का मुख्य उद्देश्य केवल उपचार नहीं, बल्कि रोगी के समग्र स्वास्थ्य का संवर्धन करना है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी नर्सिंग का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पेशा समाज के लिंग-विभाजन, सामाजिक स्तरीकरण, धर्म, संस्कृति और शिक्षा के स्तर से गहराई से जुड़ा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, स्वास्थ्य सेवाओं के ढांचे में नर्सों की भूमिका सर्वाधिक व्यापक और प्रभावी है। वे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर रोगी की देखभाल सुनिश्चित करती हैं, बल्कि सामाजिक स्तर पर स्वास्थ्य-जागरूकता फैलाने में भी एक सेतु का कार्य करती हैं।

II. नर्सिंग का प्रारंभिक इतिहास : प्राचीन काल

नर्सिंग सेवा की जड़ें मानव सभ्यता के उद्भव काल से ही गहराई से जुड़ी रही हैं। प्राचीन काल में जब भी कोई व्यक्ति रुग्ण होता था, तो परिवार की महिलाएँ जैसे माँ, बहन या पत्नी उसकी सेवा-सुश्रुषा करती थीं, जिसे नर्सिंग का 'अनौपचारिक स्वरूप' माना जा सकता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो प्राचीन ग्रीस में हिपोक्रेट्स के काल (लगभग 460-370 ई.पू.) में रोगियों की व्यवस्थित देखभाल की परंपरा का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार, भारतीय चिकित्सा पद्धति के महान ग्रंथ 'चरक संहिता' में भी रोगी की सेवा करने वाले "परिचारक" की विशेषताओं का विस्तृत वर्णन किया गया है, जिसमें उनकी दक्षता, सेवाभाव और रोगी के प्रति अटूट समर्पण पर विशेष

बल दिया गया था। मध्यकाल के दौरान नर्सिंग सेवा ने एक धार्मिक और सेवाभावी मोड़ लिया, जहाँ ईसाई धर्म और इस्लाम दोनों ने बीमारों की सेवा को एक पवित्र कर्तव्य के रूप में प्रोत्साहित किया। यूरोप में इस काल के दौरान चर्च द्वारा संचालित अस्पतालों में 'नन्स' (Nuns) बीमारों की सेवा करती थीं, जिसने पेशेवर नर्सिंग के लिए एक प्रारंभिक पृष्ठभूमि तैयार की। आधुनिक संगठित नर्सिंग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम 1632 में उठाया गया, जब विंसेंट डी पॉल ने फ्रांस में नर्सिंग सेवा को एक व्यवस्थित और संस्थागत रूप देने का प्रयास किया।

III. आधुनिक नर्सिंग की नींव : फ्लोरेंस नाइटिंगेल

आधुनिक नर्सिंग के इतिहास में फ्लोरेंस नाइटिंगेल (1820–1910) का नाम सर्वोपरि है। उनके योगदान को समझना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि उन्होंने नर्सिंग को न केवल एक व्यावसायिक रूप दिया, बल्कि इसे एक सामाजिक आंदोलन में भी बदल दिया।

1854 में क्रीमिया युद्ध के दौरान नाइटिंगेल ने 38 महिला नर्सों के साथ घायल सैनिकों की सेवा की। उन्होंने अस्पताल में स्वच्छता, वेंटिलेशन और उचित पोषण की व्यवस्था करके मृत्यु दर को उल्लेखनीय रूप से कम किया। उनके इस कार्य ने यह सिद्ध किया कि व्यवस्थित देखभाल चिकित्सा जितनी ही महत्त्वपूर्ण है।

1860 में लंदन के सेंट थॉमस हॉस्पिटल में उन्होंने विश्व का पहला आधुनिक नर्सिंग प्रशिक्षण विद्यालय "नाइटिंगेल नर्सिंग स्कूल" स्थापित किया। यह एक ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि इसने नर्सिंग को औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण से जोड़ा। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह घटना महत्त्वपूर्ण थी, एक उच्च-वर्गीय महिला का इस पेशे में आना और उसे प्रतिष्ठा दिलाना, उस समय की सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देना था।

IV. भारत में नर्सिंग का विकास

भारत में आधुनिक नर्सिंग का इतिहास ब्रिटिश उपनिवेशकाल से जुड़ा है। 1857 के सैनिक विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत में सैनिक अस्पतालों में व्यवस्थित नर्सिंग सेवा की आवश्यकता महसूस की।

प्रमुख ऐतिहासिक पड़ाव:

- 1857 — भारत में पहले सैनिक अस्पतालों में नर्सिंग की शुरुआत
- 1871 — पहली बार भारतीय महिलाओं को नर्सिंग प्रशिक्षण
- 1873 — बॉम्बे में पहला नर्सिंग स्कूल स्थापित
- 1901 — भारतीय नर्सिंग काउंसिल की स्थापना की पृष्ठभूमि
- 1903 — सैनिक नर्सिंग सेवा का विस्तार
- 1905 — नर्सों का पंजीकरण प्रारंभ
- 1935 — अखिल भारतीय नर्सिंग परिषद् की स्थापना
- 1946 — भारतीय नर्सिंग काउंसिल अधिनियम
- 1947 — स्वतंत्रता के बाद नर्सिंग शिक्षा का राष्ट्रीय ढाँचा

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में नर्सिंग शिक्षा को संगठित रूप दिया गया। GNM (General Nursing and Midwifery) और ANM (Auxiliary Nurse Midwifery) जैसे पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। GNM तीन वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम है जो अस्पताल और सामुदायिक स्तर पर कार्य हेतु तैयार करता है, जबकि ANM दो वर्षीय कार्यक्रम है जो ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं पर केन्द्रित है।

V. नर्सिंग का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. लिंग और नर्सिंग

नर्सिंग पेशे का सामाजिक इतिहास लिंग-भेद (Gender) से अत्यंत गहराई से जुड़ा है। परंपरागत रूप से यह माना

जाता था कि देखभाल और सेवा "स्त्री-स्वभाव" है, इसीलिए नर्सिंग को महिलाओं का पेशा समझा गया। समाजशास्त्री इसे "लिंग-आधारित श्रम विभाजन" (Gendered Division of Labour) कहते हैं। फ्लोरेंस नाइटिंगेल के समय भी यह धारणा थी कि नर्सिंग के लिए "मातृत्व भावना" आवश्यक है, और यही कारण था कि इस पेशे में पुरुषों की भागीदारी बहुत कम रही। हालाँकि आधुनिक काल में यह स्थिति बदल रही है, आज पुरुष नर्स भी इस क्षेत्र में सक्रिय हैं, जो सामाजिक परिवर्तन का प्रमाण है।

2. सामाजिक स्तरीकरण और नर्सिंग

भारत में नर्सिंग पेशे का सामाजिक इतिहास जाति और वर्ग के आयामों से भी जुड़ा है। प्रारंभ में उच्च-जाति की महिलाएँ नर्सिंग को हेय दृष्टि से देखती थीं, क्योंकि रोगी के शरीर को स्पर्श करना और उसके मल-मूत्र की सफाई करना उनकी जाति-मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। इसके परिणामस्वरूप, प्रारंभिक दौर में नर्सिंग में निम्न-जाति वर्ग या ईसाई धर्म की महिलाओं का बाहुल्य रहा।

डॉ. राम आहूजा के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो सामाजिक संरचना, मूल्यों और संस्थाओं में क्रमिक या आमूल परिवर्तन लाती है।" नर्सिंग पेशे का विकास इसी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का एक सजीव उदाहरण है, जहाँ एक 'अपमानजनक' समझा जाने वाला काम धीरे-धीरे एक सम्मानित और आवश्यक पेशे में बदल गया।

3. चिकित्सा समाजशास्त्र और नर्सिंग

चिकित्सा समाजशास्त्र (Medical Sociology) नर्सिंग के अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण ढाँचा प्रदान करता है। इस ढाँचे में नर्सिंग को केवल तकनीकी सेवा नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रिया के रूप में देखा जाता है जो रोगी, परिवार, समुदाय और स्वास्थ्य संस्था के बीच संबंध स्थापित करती है। इलियट फ्रीडसन (Eliot Freidson) जैसे समाजशास्त्रियों ने चिकित्सकीय पेशे की सत्ता-संरचना का विश्लेषण किया है, जिसमें डॉक्टर सर्वोच्च, और नर्स उसके नीचे पदानुक्रम में स्थित हैं। यह पदानुक्रम केवल ज्ञान का नहीं, बल्कि लिंग और वर्ग का भी परिणाम है।

VI. सामाजिक परिवर्तन और नर्सिंग

1922 में समाजशास्त्री मैकाइवर और पेज ने "Social Change" की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा था कि समाज में होने वाले परिवर्तन सामाजिक संबंधों में आमूल बदलाव लाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में नर्सिंग पेशे का विकास सामाजिक परिवर्तन के एक सशक्त सूचक के रूप में देखा जा सकता है।

आधुनिक भारत में निम्नलिखित सामाजिक कारकों ने नर्सिंग के विकास को प्रभावित किया है:

- औद्योगीकरण और शहरीकरण — शहरों में अस्पतालों का विस्तार और प्रशिक्षित नर्सों की माँग में वृद्धि
- महिला शिक्षा — साक्षर और शिक्षित महिलाओं का पेशेवर नर्सिंग में प्रवेश
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीतियाँ — 1946 के भोर समिति रिपोर्ट से लेकर राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 तक नर्सिंग को विशेष महत्त्व
- वैश्वीकरण — भारतीय नर्सों की अंतरराष्ट्रीय माँग विशेष रूप से खाड़ी देशों, अमेरिका, ब्रिटेन में
- मीडिया और जागरूकता — टेलीविजन और मीडिया ने नर्सिंग की सामाजिक छवि को बेहतर बनाने में मदद की

भारत की 2009 की जनसंख्या के आँकड़ों के अनुसार प्रति 1000 जनसंख्या पर नर्सों का अनुपात अंतरराष्ट्रीय मानकों से बहुत कम था, जो स्वास्थ्य सेवा में गहरी असमानता को उजागर करता है। WHO के मानक के अनुसार प्रति 1000 व्यक्ति पर कम से कम 1 नर्स होनी चाहिए, जबकि भारत में यह अनुपात अभी भी पर्याप्त नहीं है।

VII. नर्सिंग शिक्षा की संरचना : भारतीय संदर्भ

स्वतंत्र भारत में नर्सिंग शिक्षा एक सुसंगठित ढाँचे में विकसित हुई है:

- ANM (Auxiliary Nurse Midwifery) — 2 वर्षीय डिप्लोमा, ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों के लिए
- GNM (General Nursing & Midwifery) — 3 वर्षीय डिप्लोमा, अस्पताल और सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा के लिए
- B.Sc Nursing — 4 वर्षीय स्नातक कार्यक्रम
- M.Sc Nursing — स्नातकोत्तर विशेषज्ञता

भारतीय नर्सिंग काउंसिल (Indian Nursing Council) इन सभी पाठ्यक्रमों को मान्यता प्रदान करती है और पाठ्यक्रम का मानकीकरण करती है। यह संस्थागत व्यवस्था नर्सिंग को एक वैधानिक और पेशेवर दर्जा देती है, जो समाजशास्त्रीय दृष्टि से "पेशेवरीकरण" (Professionalization) की प्रक्रिया है।

VIII. नर्सिंग, स्वास्थ्य और समाज : समकालीन चुनौतियाँ

वर्तमान समय में नर्सिंग पेशे के सामने कई सामाजिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ हैं:

1. कम वेतन और सेवा शर्तें — भारत में नर्सों को उनके कार्यभार के अनुपात में उचित वेतन नहीं मिलता, जो इस पेशे में प्रतिभा पलायन को बढ़ावा देता है
2. मानसिक और शारीरिक थकान — दीर्घ कार्य-घंटे, रात की पारियाँ और रोगियों की भावनात्मक देखभाल नर्सों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती है
3. सामाजिक प्रतिष्ठा की कमी — ग्रामीण भारत में नर्सिंग को अभी भी पूरी तरह सम्मानित पेशा नहीं माना जाता
4. लिंग-आधारित हिंसा — अस्पतालों में नर्सों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएँ सामाजिक असमानता की ओर इशारा करती हैं
5. ग्रामीण-शहरी असमानता — शहरी अस्पतालों में नर्सों की संख्या पर्याप्त है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में भारी कमी है

IX. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में नर्सिंग की भूमिका

टेलकॉट पार्सन्स की कार्यवादी (Functionalist) दृष्टि से नर्सिंग समाज के लिए एक महत्वपूर्ण "प्रकार्यात्मक आवश्यकता" (Functional Prerequisite) पूरी करती है अर्थात् बीमार व्यक्ति को उसकी सामाजिक भूमिकाओं में पुनः वापस लाने का काम। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है, तो वह "बीमार की भूमिका" (Sick Role) में प्रवेश करता है, और नर्स उसे इस भूमिका से मुक्त करने में सहायक होती है। संघर्षवादी (Conflict Theory) दृष्टिकोण से नर्सिंग पेशे में डॉक्टर-नर्स के बीच का सत्ता-संघर्ष, लिंग-भेद और वर्गभेद स्पष्ट रूप से दिखते हैं। नव-मार्क्सवादी विचारक इसे स्वास्थ्य सेवा की "पूँजीवादी संरचना" का हिस्सा मानते हैं जहाँ नर्स को "सस्ते श्रम" के रूप में उपयोग किया जाता है।

X. उपसंहार

नर्सिंग सेवा का इतिहास मात्र एक पेशे का विवरण नहीं, बल्कि समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका, स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और संस्थागत परिवर्तनों का एक जीवंत दस्तावेज है। प्राचीन काल की अनौपचारिक पारिवारिक सेवा से लेकर आधुनिक 'बी.एस.सी. नर्सिंग' (B.Sc Nursing) तक की यह विकास यात्रा दर्शाती है कि समाज और नर्सिंग पेशा निरंतर एक-दूसरे को आकार देते रहे हैं। यह क्रमिक परिवर्तन इस सेवा की बढ़ती स्वीकार्यता और इसके वैज्ञानिक आधार को पुख्ता करता है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि नर्सिंग पेशे के समक्ष मौजूद चुनौतियाँ जैसे कम पारिश्रमिक,

सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी या लिंग-भेद वास्तव में समाज की गहरी संरचनात्मक समस्याओं का ही प्रतिबिंब हैं। अतः इन चुनौतियों का स्थायी समाधान केवल चिकित्सकीय सुधारों तक सीमित नहीं रह सकता; इसके लिए सामाजिक, आर्थिक और नीतिगत स्तरों पर एकीकृत प्रयास आवश्यक हैं। नर्सिंग को उसका उचित सम्मान दिलाना समाज की समग्र प्रगति के लिए अनिवार्य है।

संदर्भ-सूची

[1] क्रेग, एल. (2013), द हिस्ट्री ऑफ नर्सिंग, लूसेंट बुक्स, लंदन।

[2] क्लेमेंट, आई. (2015), मैनेजमेंट ऑफ नर्सिंग सर्विसेज एंड एजुकेशन, एल्सेवियर साइंस, न्यू यॉर्क।

[3] बेंडिक्स, आर. (1960), कम्युनिकेशन बिटवीन डॉक्टर एंड पेशेंट्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।

[4] ब्लूम, एस. डब्ल्यू. (1963), द डॉक्टर एंड हिज पेशेंट: ए सोशियोलॉजिकल इंटरप्रिटेशन, रसेल सेज फाउंडेशन, न्यू यॉर्क।

[5] आहूजा, राम (2010), समाजशास्त्र, पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

[6] डब्ल्यूएचओ रिपोर्ट ऑन नर्सिंग (2006), बीबीसी हिंदी।

[7] राष्ट्रीय जनगणना 2001, भारत सरकार।